दादू दयाल

जीवन परिचय

दादू दयाल का जन्म अनुमानतः संवत् 1601 में अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ था। इनके जीवन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं मिलती। कहा जाता है वे गृहस्थी त्यागकर 12 वर्षों तक कठिन तप करते रहे। उसके बाद वे नरेना (जयपुर) आ बसे। दादू दयाल जी के अनुभव वाणी (दादूवाणी) से प्रेरित होकर उनके अनुयायियों ने एक पंथ की स्थापना की, जिसे दादू पंथ के नाम से जाना गया। दादू दयाल की कविता अपने विचारों में कबीर की कविता के निकट प्रतीत होती है। दादूवाणी व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा देती है। उनके शिष्यों में रज्जब, सुंदरदास, और गरीबदास भी प्रसिद्ध कवि हैं। दादू दयाल की कविता में कबीर की ही तरह सबद, साखी और पद मिलते हैं। यहाँ उनके दो पद और कुछ दोहे दिए जा रहे हैं।

अजहूँ न निकसे प्रान कठोर
दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुंदर प्रीतम मोर
चारि पहर चारो जुग बीते रैनि गँवाई भोर
अवधि गई अजहूँ नहिं आए, कतहुँ रहे चितचोर
कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत तोर
दादू ऐसे आतुर बिरहिनि जैसे चंद चकोर।

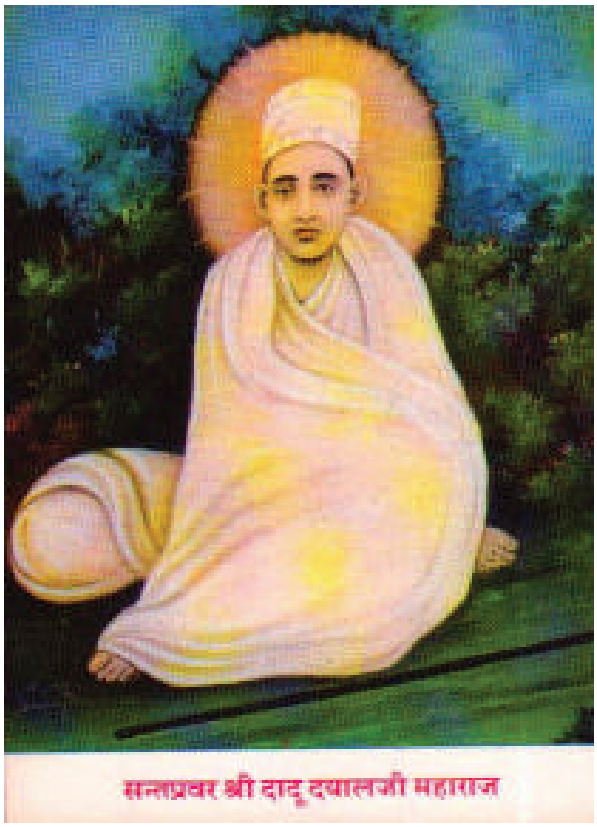
सन्तप्रवर श्री दादू दयालजी महाराज

भाई रे! ऐसा पंथ हमारा
द्वै पख रहितपंथ गह पूरा अबरन एक अधारा
बाद बिबाद काहू सौं नाहीं मैं हूँ जग से न्यारा
समदृष्टि सूँ भाई सहज में आपहिं आप बिचारा
मैं, तैं, मेरी यह गति नाहीं निरबैरी निरविकारा
काम कल्पना कदै न कीजै पूरन ब्रह्म पियारा
एहि पथि पहुँचि पार गहि दादू, सों तत् सहज संभारा

हिंदू तुरक न जाणों दोइ।
साँईं सबका सोई है रे, और न दूजा देखौं कोई।।

कीट–पतंग सबै जोनिन, जल–थल संगि समाना सोई।
पीर पैगाम्बर देव–दानव, मीर–मलिक मुनि–जनकौं मोहि।।1।।
करता है रे सोई चीन्हौं, जिन वै रोध करै रे कोई।
जैसें आरसी मंजन कीजै, राम–रहीम देही तन धोई।।2।।
साँईंकेरी सेवा कीजै पायौ धन काहे कौं खोई।
दादू रे जन हरि भज लीजै, जनम–जनम जे सुरजन होई।।3।।

दादू घटि कस्तुरी मृग के, भरमत फिरे उदास।
अंतर गति जाणे नही, ताथै सूंघे घाँस।।4।।

दादू सब घट में गोविन्द है, संग रहै हरि पास ।
कस्तुरी मृग में बसै, सूंघत डोले घाँस।।5।।

शब्दार्थ :–

निरखि – ध्यान से देखना; **चितवत** – देखना; **बिरहिन** – विरह (वियोग) में व्याकुल; **मसीत** – मस्जिद; **जनि** – नहीं; **समदृष्टि** – समान भाव से देखना, तटस्थ दृष्टि; **निरबैरी** – बैरी विहीन; **निरविकरा** – निर्विकार; **कदै –** कहै; **गहि** – पकड़ना; **तुरक–**तुर्क; **चीन्हौं** – पहचानना; **आरसी** – दर्पण; **साँईंकेरी** –ईश्वर कृपा, साँईंकृपा, **भरमत** – भ्रम, **जाणे** – जानना।

यह भी पढ़िए

आपै मारे आपको, आप आपको खाइ ।। 1।।
आपै अपना काल हे, दादू कह समझाई
आपा मेटे हरि भजै, तन मन तजे विकार ।। 2।।
निर्वैरी सब जीव सौं, दादू यहू मत सार।।
आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार।। 3।।
दादू मूल विचारिए, दूजा कौन गंवार।।

निगुर्ण भक्ति की ज्ञानाश्रयी शाखा के मूर्धन्य कवि कबीर की निम्नांकित पंक्तियाँ पढ़िए। दादू दयाल व कबीर की पंक्तियों में काफी समानता देखने को मिलता है। :–

कस्तुरी कुण्डलि बसै मृग ढूढैं वन माहि
ऐसे घट–घट राम है दुनिया देखे नाहिं।

अभ्यास

पाठ से

1. अपने पदों में मीरा खुद को दासी कहती हैं। ऐसा कहने के पीछे क्या आशय है? लिखिए।
2. 'गई कुमति, लई साधु की संगति' से कवि का क्या आशय है? लिखिए।
3. मीरा को जो अमोलक वस्तु मिली है उसके बारे में वे क्या–क्या बता रही हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
4. राम रतन धन को जनम जनम की पूंजी कहने का आशय क्या है? लिखिए।
5. राणा ने मीरा बाई को विष का प्याला क्यों भेजा होगा और मीरा बाई उस विष को पीते हुए क्यों हँसी? अपने विचार लिखिए।
6. "भाई रे! ऐसा पंथ हमारा" कविता में दादू के पंथ के बारे में पद में क्या–क्या बताया गया है?
7. उपासना के सगुण और निर्गुण दोनों पक्षों को आपने कविताओं में पढ़ा है। आपके अनुसार दोनों में से कौन–सा पक्ष अधिक सरल है? अपनी बातें तर्क सहित लिखिए।
8. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

   "करता है रे सोई चीन्हौं, जिन वै रोध करै रे कोइ।

   जैसैं आरसी मंजन कीजै, राम–रहीम देही तन धोइ।

पाठ से आगे

1. क्या आपको कोई ऐसी वस्तु मिली है जिससे बेहद खुशी महसूस हुई हो। उसके बारे में बताइए।
2. कभी–कभी लोग अपने जीवन मूल्यों, आदर्शों और त्याग के कारण ज्यादा अमूल्य वस्तुओं को छोडकर साधारण वस्तुओं का चयन करते हैं। आपके अनुभव में भी ऐसी घटनाएँ होंगी जब आपने ऐसा कुछ होते देखा–पढ़ा अथवा सुना हो। एक या दो उदाहरण लिखिए।
3. क्या आज भी हमारे समाज में महिलाओं के साथ भेद–भाव होता है? तर्क देकर अपनी बात को पुष्ट कीजिए।
4. आज भी हमारे देश में जाति और संप्रदाय के नाम पर झगड़े होते हैं। आपके अनुसार इसके क्या कारण हैं? इन कारणों का समाधान किस तरह से किया जा सकता है? विचार कर लिखिए।
5. मध्यकाल के कवियों के बारे में कहा जाता है कि वे अशिक्षित या अल्पशिक्षित थे फिर भी उन्होंने अच्छे ग्रंथों और काव्यों की रचना की। वे ऐसा कैसे कर पाए होंगे? अपने साथियों और शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।

6. वर्तमान समय में समाज का झुकाव भौतिक सौंदर्य के प्रति बढ़ता जा रहा है। इन परिस्थितियों में अध्यात्म के जरिए आन्तरिक सौंदर्य की ओर उन्मुख होना (लौटना) आपकी समझ में कितना महत्व रखता है? शिक्षक से चर्चा कीजिए और लिखिए।

भाषा के बारे में

4BDG4I

1. पाठ में दी गई कविताओं में ऐसे शब्द आए हैं जिनका चलन आजकल नहीं है। उन्हें पहचान कर लिखिए।
2. पाठ में प्रयोग हुई भाषा आपके घर की भाषा से किस प्रकार भिन्न है? इससे मिलते–जुलते शब्द आपकी भाषा मे भी होंगे। उन्हें छाँट कर लिखिए।
3. अपने शिक्षक और सहायक पुस्तक की मदद लेकर इस बात पर चर्चा करें की गद्य और पद्य की भाषा में किस प्रकार का अंतर होता है?
4. कविता में लय और गेयता लाने के लिए भाषा की स्वर ध्वनियों को लघु (। = ह्रस्व) और गुरु (ऽ = दीर्घ) के अनुसार उपयोग किया जाता है। स्वरों के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहा जाता है। इन स्वरों को ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत इन तीन वर्गों में बाँटा गया है।

ह्रस्व स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगता है उसे ह्रस्व स्वर (वर्ण) कहते हैं। यथा – अ, इ, उ, ऋ, और अनुनासिक।

दीर्घ स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है उसे दीर्घ स्वर (वर्ण) कहते हैं। यथा – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ (अनुस्वार एवं संयुक्ताक्षर के पहले का वर्ण)

प्लुत स्वर – जिन वर्णों के उच्चारण में दो से अधिक मात्रा का समय लगता है उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। **वैदिक मंत्रों एवं संगीत में इन स्वरों का उपयोग किया जाता है।**

नीचे दो पंक्तियों में इन मात्राओं को गिनने का प्रयास किया गया है–

।। ऽ	।	।। ऽ	ऽ ।	। ऽ।	= 16 मात्राएँ,
अजहूँ	न	निकसे	प्रान	कठोर	

।।।	। ऽ	। । ऽ	। ।	ऽ ऽ,	। ।ऽ	। ऽ	। । ऽ।	= 17, 11 = 28 मात्राएँ
अवधि	गई	अजहूँ	नहि	आए,	कतहुँ	रहे	चितचोर	

इसी गणना के आधार पर छंद की पहचान की जाती है। यह 28 मात्रा वाला हरिगीतिका छंद है। इसी प्रकार आप भी मीरा के पदों में मात्राओं की गणना कीजिए और छंद का नाम शिक्षक से पता कीजिए।

योग्यता विस्तार –

4BMC66

1. छत्तीसगढ़ में भी कई महान संत हुए हैं। आप उनकी रचनाओं को संग्रहित कीजिए और मित्रों के साथ उन पर चर्चा कीजिए।
2. पाठ में से अपनी पसंद के पदों की लय बनाकर संगीतमय प्रस्तुति कीजिए।
3. कबीरदास जी की साखियों को ढूंढ कर पढ़िए व आपस में चर्चा कीजिए।